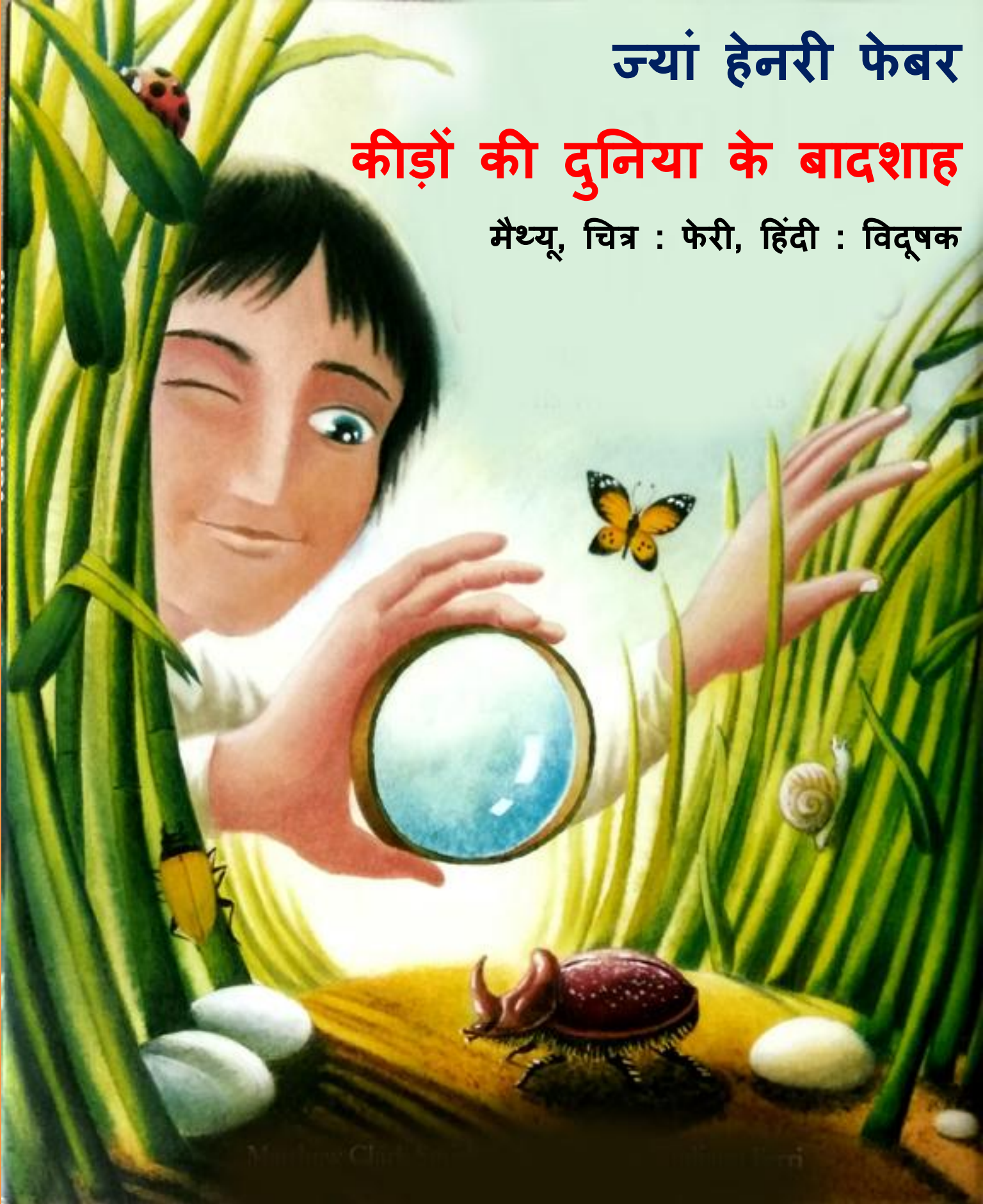
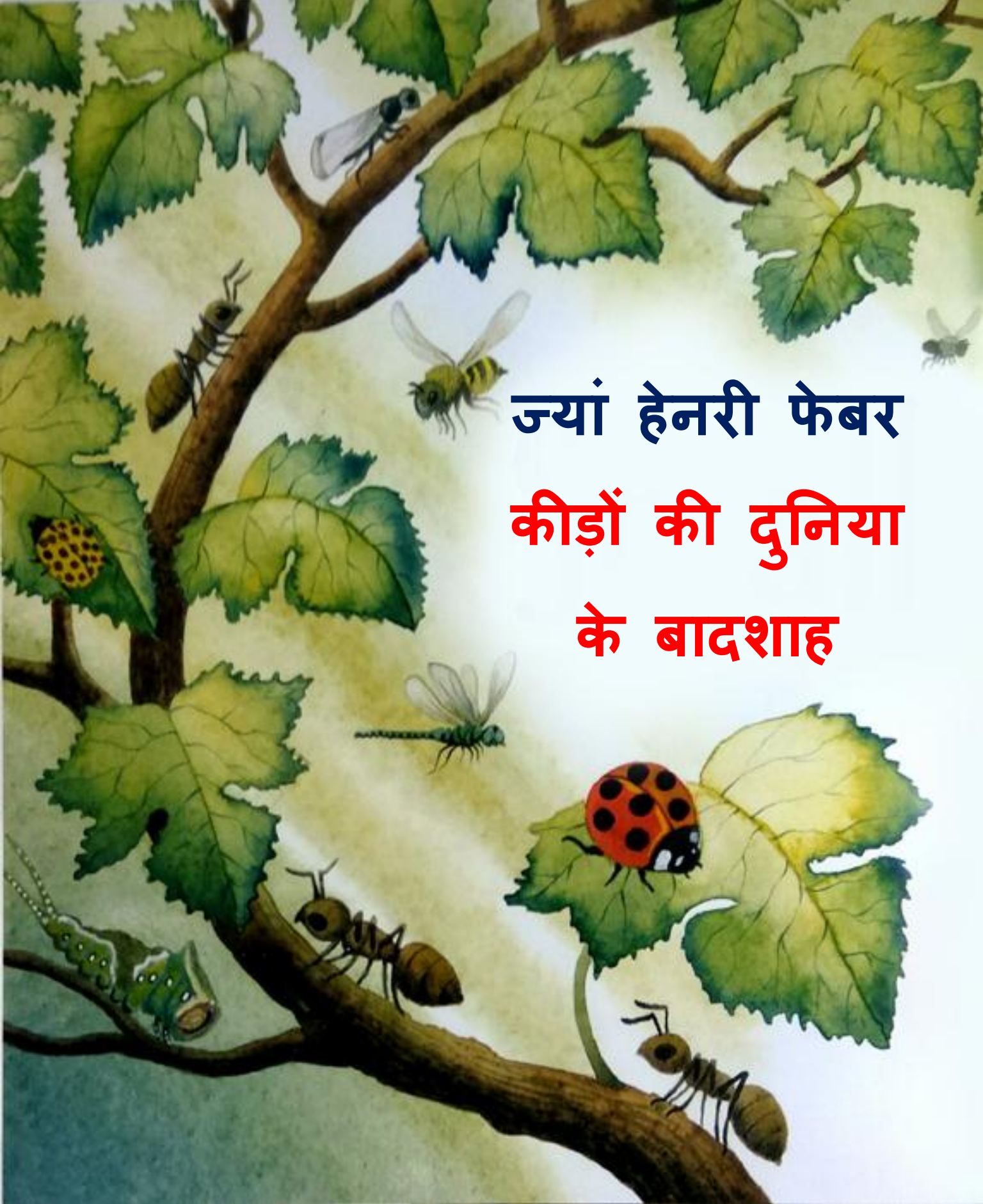
ज्यां हेनरी फेबर

कीड़ों की दुनिया के बादशाह

मैथ्यू, चित्र : फेरी, हिंदी : विदूषक







ज्यां हेनरी फेबर

कीड़ों की दुनिया के बादशाह

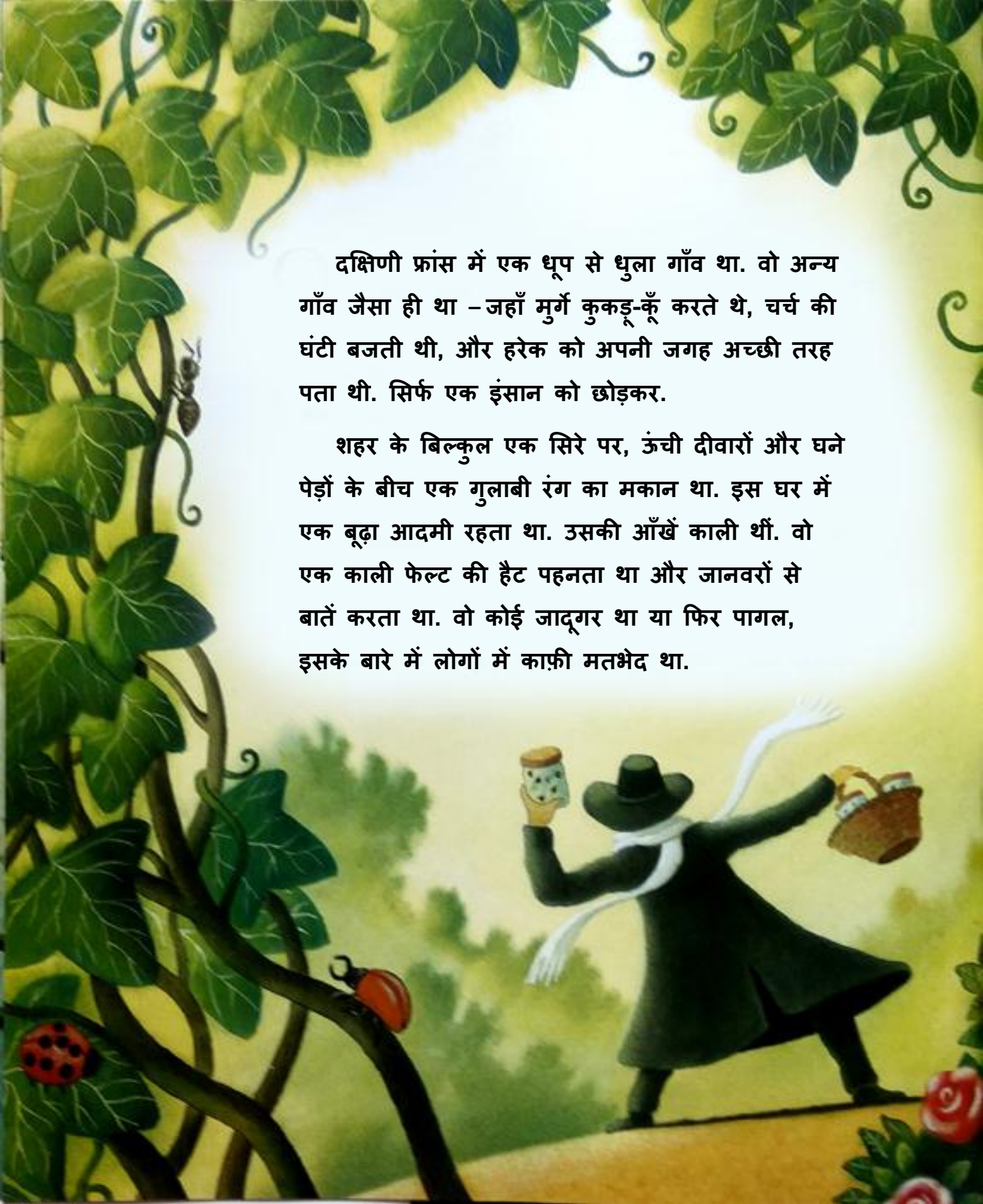




एक कीट जिसकी "छठी" इंद्री होती है. एक कीट (बीटल) जो खुद से दुगने आकार के जीव का शिकार करती है. कीड़ों-मकौड़ों की ज़िन्दगी के बारे में दुनिया बहुत कम ही जानती थी. उसके बाद एक आदमी ने पूरी दुनिया से उनका परिचय कराया.

इस पुस्तक में आपकी मुलाकात ज्यां हेनरी फेबर से होगी. वो दुनिया के प्रमुख प्राकृतिक वैज्ञानिकों में से एक थे. उनकी जिंदगी भी उन कीड़ों-मकौड़ों जैसी ही अनूठी थी जिनका वो अध्य्यन करते थे. बचपन में हेनरी, फ्रांस के ग्रामीण इलाकों में घंटों, कीड़ों-मकौड़ों को गौर से निहारते थे. वो उनका अध्य्यन बिलकुल नए तरीके से करना चाहते थे. वो मृत और उबाऊ कीड़ों की बजाए उनका अध्य्यन उनके प्राकृतिक परिवेश में करना चाहते थे. अपनी खोजों में उन्होंने जो पाया वो बिल्कुल चौकाने वाला था. तुच्छ से दिखने वाले कीड़े बड़ी रहस्यमय जिंदगी जीते थे. उनके जीवन में गज़ब का ड्रामा था!

इस पुस्तक ने शब्दों और सुन्दर चित्रों में एक ऐसे इंसान के जीवन को चित्रित किया है जिसके शोध ने पूरी दुनिया का कीड़ों-मकौड़ों को देखने का नज़रिया ही बदल डाला.



दक्षिणी फ्रांस में एक धूप से धुला गाँव था. वो अन्य गाँव जैसा ही था – जहाँ मुर्गे कुकड़ू-कूँ करते थे, चर्च की घंटी बजती थी, और हरेक को अपनी जगह अच्छी तरह पता थी. सिर्फ एक इंसान को छोड़कर.

शहर के बिल्कुल एक सिरे पर, ऊंची दीवारों और घने पेड़ों के बीच एक गुलाबी रंग का मकान था. इस घर में एक बूढ़ा आदमी रहता था. उसकी आँखें काली थीं. वो एक काली फेल्ट की हैट पहनता था और जानवरों से बातें करता था. वो कोई जादूगर था या फिर पागल, इसके बारे में लोगों में काफ़ी मतभेद था.



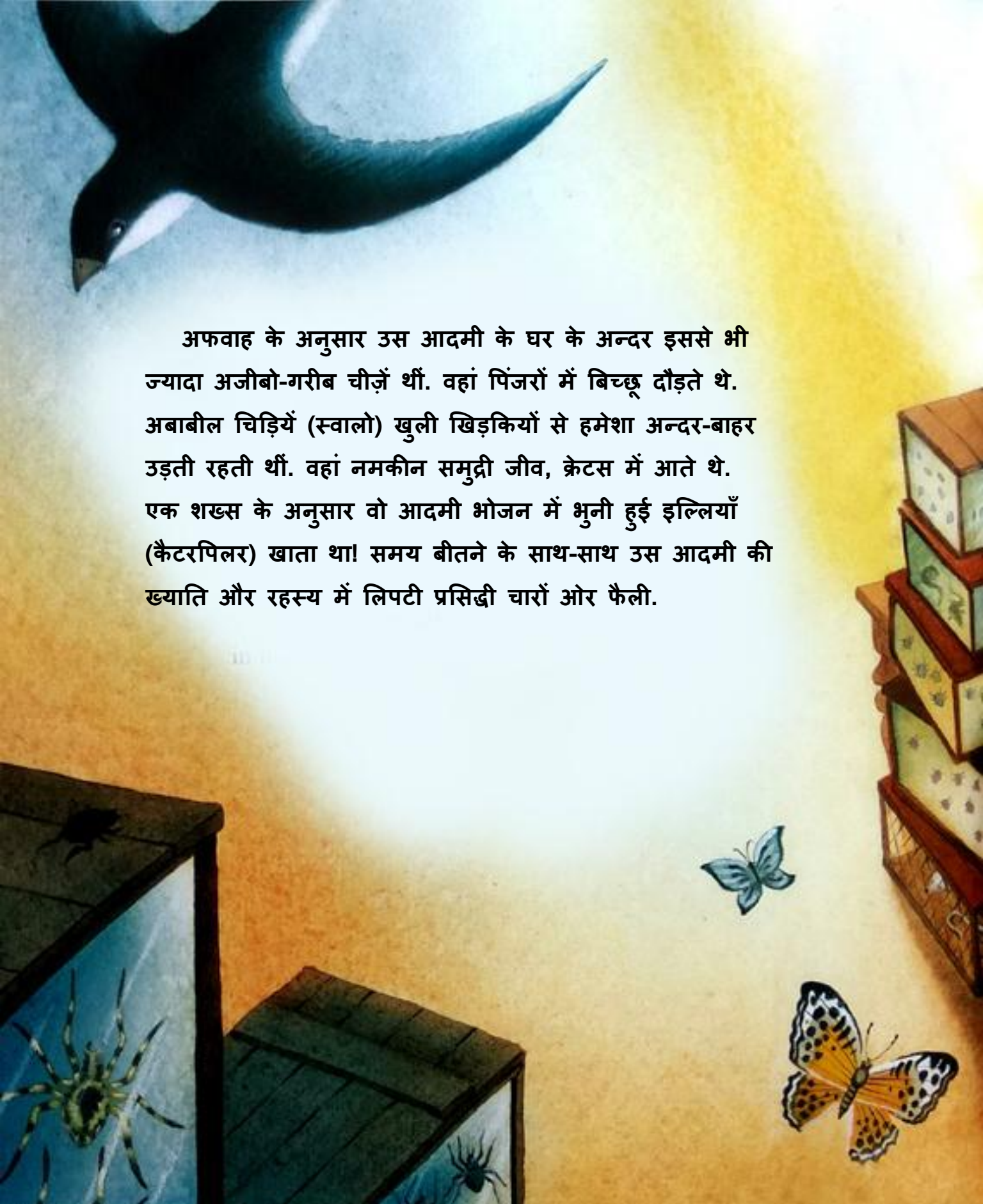
दोपहर की तपती गर्मी में, वो धूप में बैठकर बीटल्स (एक प्रकार के कीट) को गड्ढे खोदते हुए निहारता था.

अँधेरी स्याह रातों में वो झाड़ियों में, मकड़ियों को जाल बुनते देखता था.

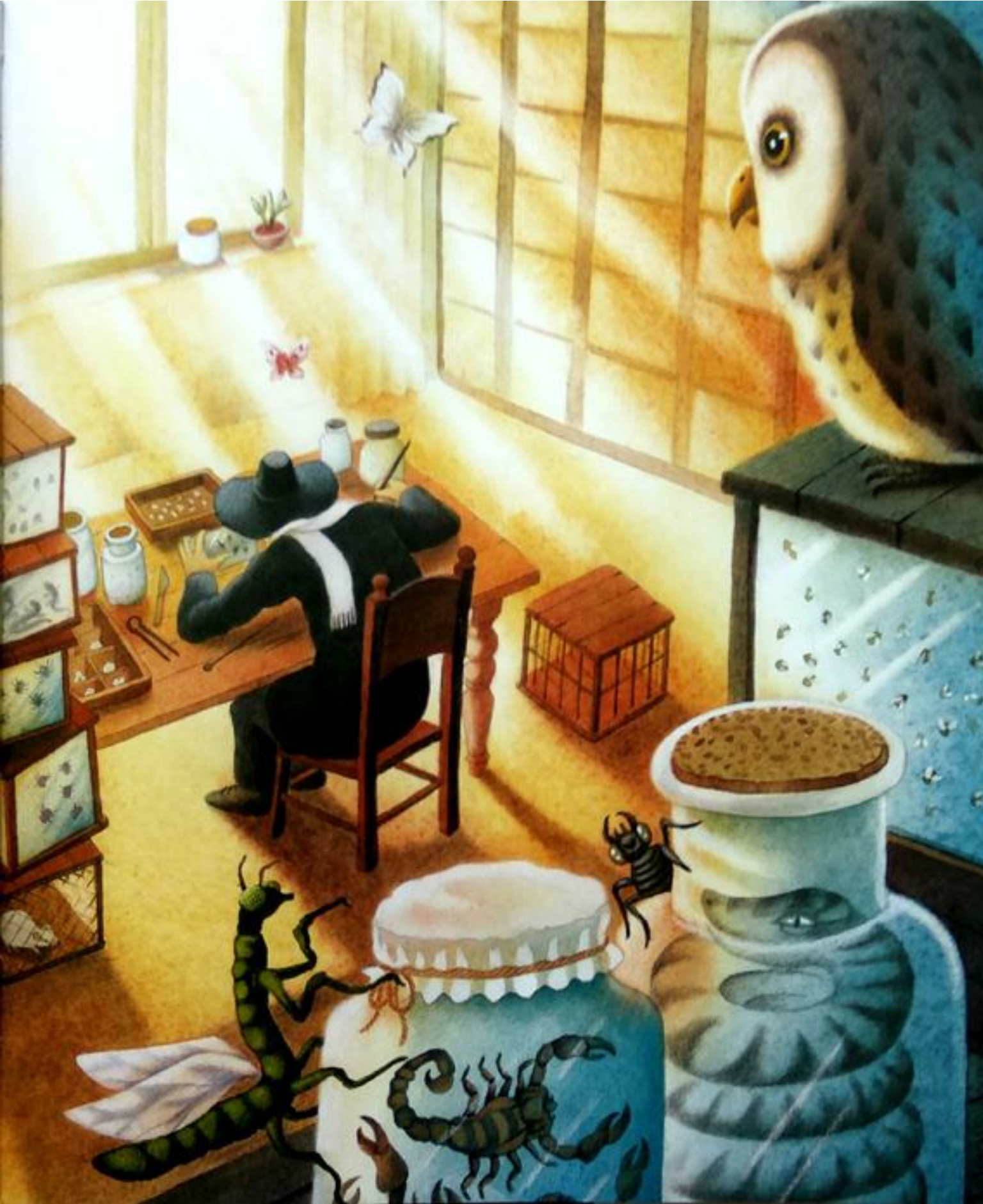
वो बच्चों को मरे छछून्दर और छिपकलियाँ पकड़ने के लिए ईनाम में सिक्के देता था. फिर वो उन मृत जीवों को बाग़ में रखकर ब्लू-बोटल फ्लाईज़ को आकर्षित करता था.







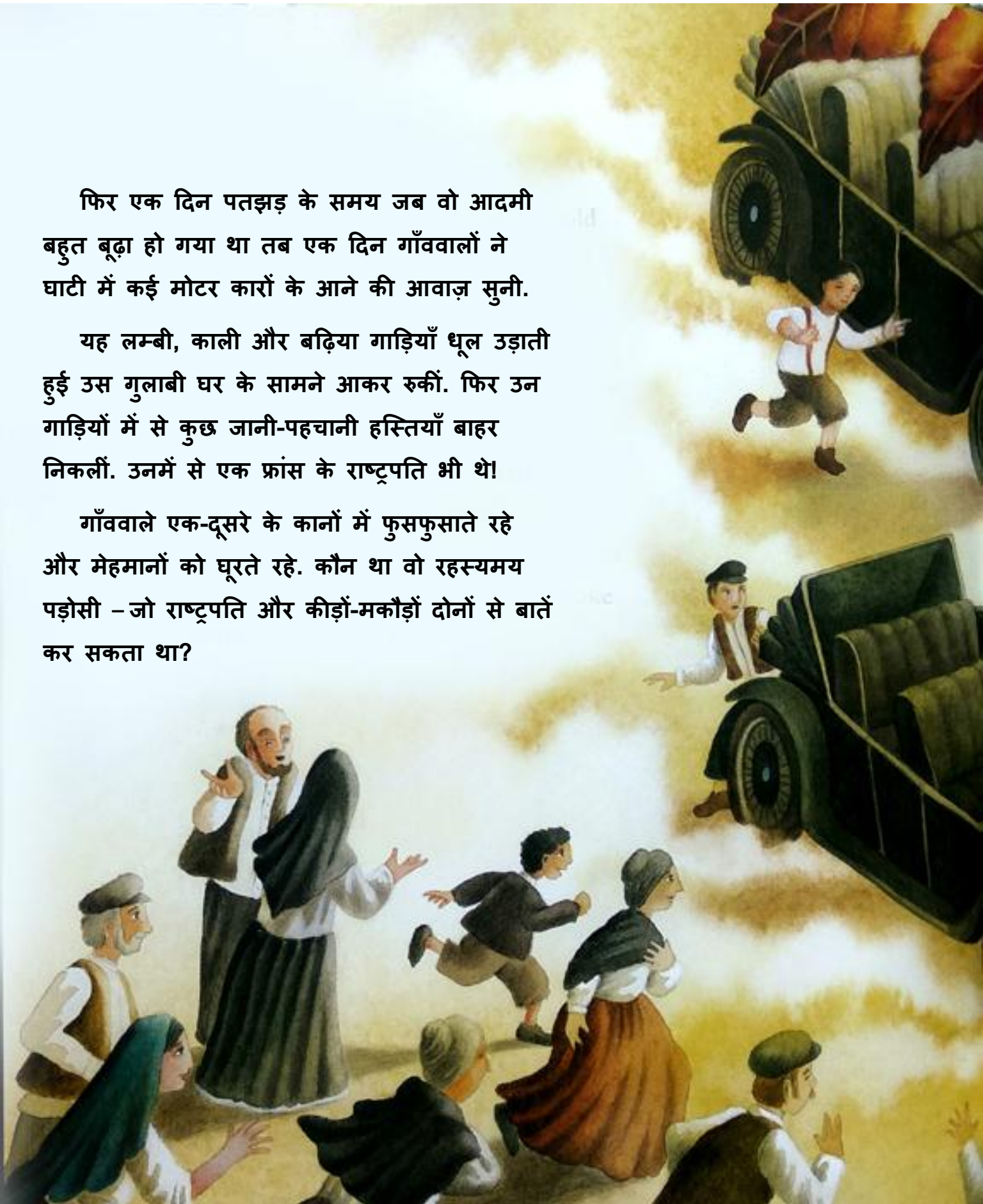
अफवाह के अनुसार उस आदमी के घर के अन्दर इससे भी ज्यादा अजीबो-गरीब चीज़ें थीं. वहां पिंजरों में बिच्छू दौड़ते थे. अबाबील चिड़ियें (स्वालो) खुली खिड़कियों से हमेशा अन्दर-बाहर उड़ती रहती थीं. वहां नमकीन समुद्री जीव, क्रेटस में आते थे. एक शख्स के अनुसार वो आदमी भोजन में भुनी हुई इल्लियाँ (कैटरपिलर) खाता था! समय बीतने के साथ-साथ उस आदमी की ख्याति और रहस्य में लिपटी प्रसिद्धी चारों ओर फैली.



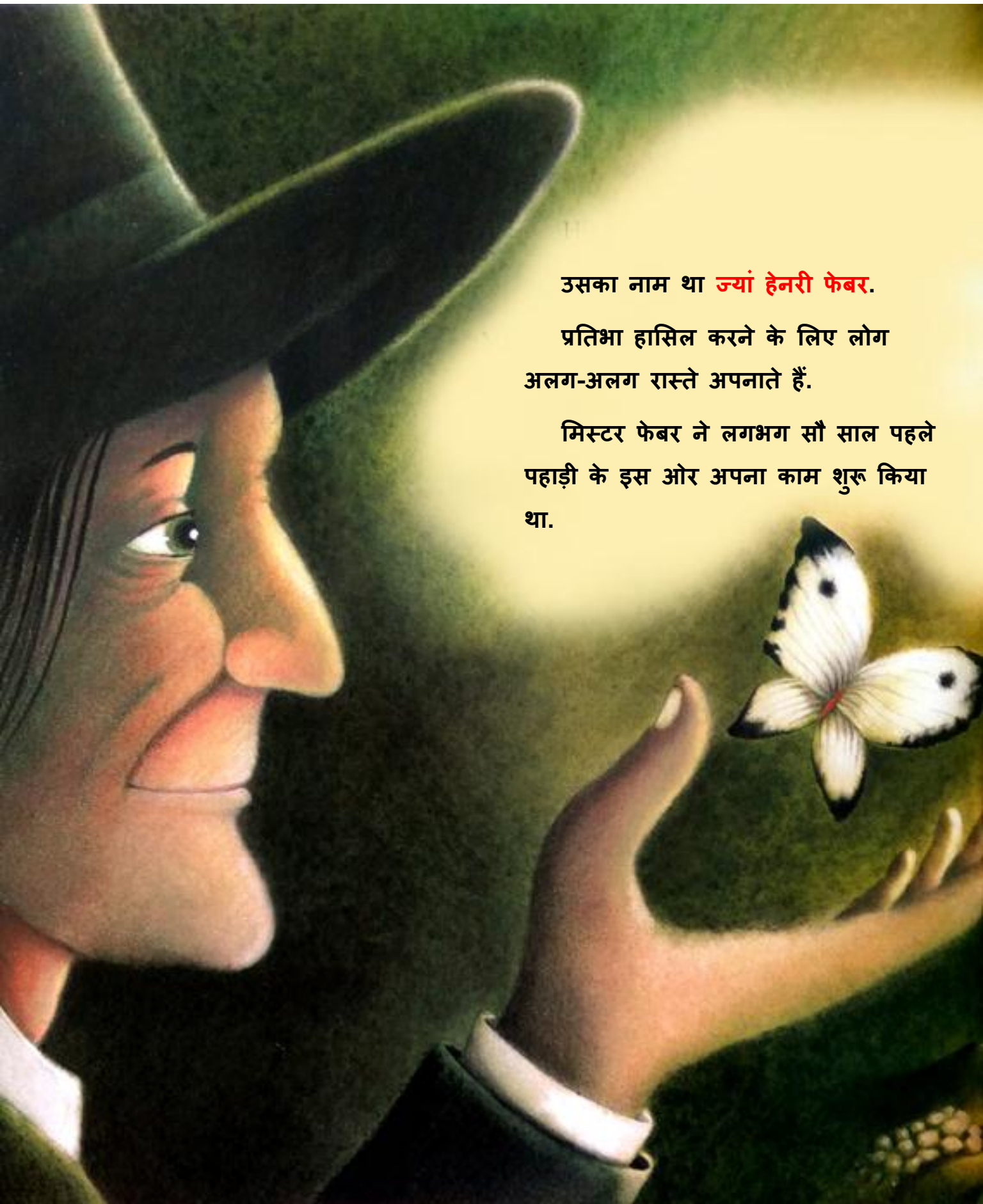
फिर एक दिन पतझड़ के समय जब वो आदमी बहुत बूढ़ा हो गया था तब एक दिन गाँववालों ने घाटी में कई मोटर कारों के आने की आवाज़ सुनी.

यह लम्बी, काली और बढ़िया गाड़ियाँ धूल उड़ाती हुई उस गुलाबी घर के सामने आकर रुकीं. फिर उन गाड़ियों में से कुछ जानी-पहचानी हस्तियाँ बाहर निकलीं. उनमें से एक फ्रांस के राष्ट्रपति भी थे!

गाँववाले एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाते रहे और मेहमानों को घूरते रहे. कौन था वो रहस्यमय पड़ोसी – जो राष्ट्रपति और कीड़ों-मकौड़ों दोनों से बातें कर सकता था?





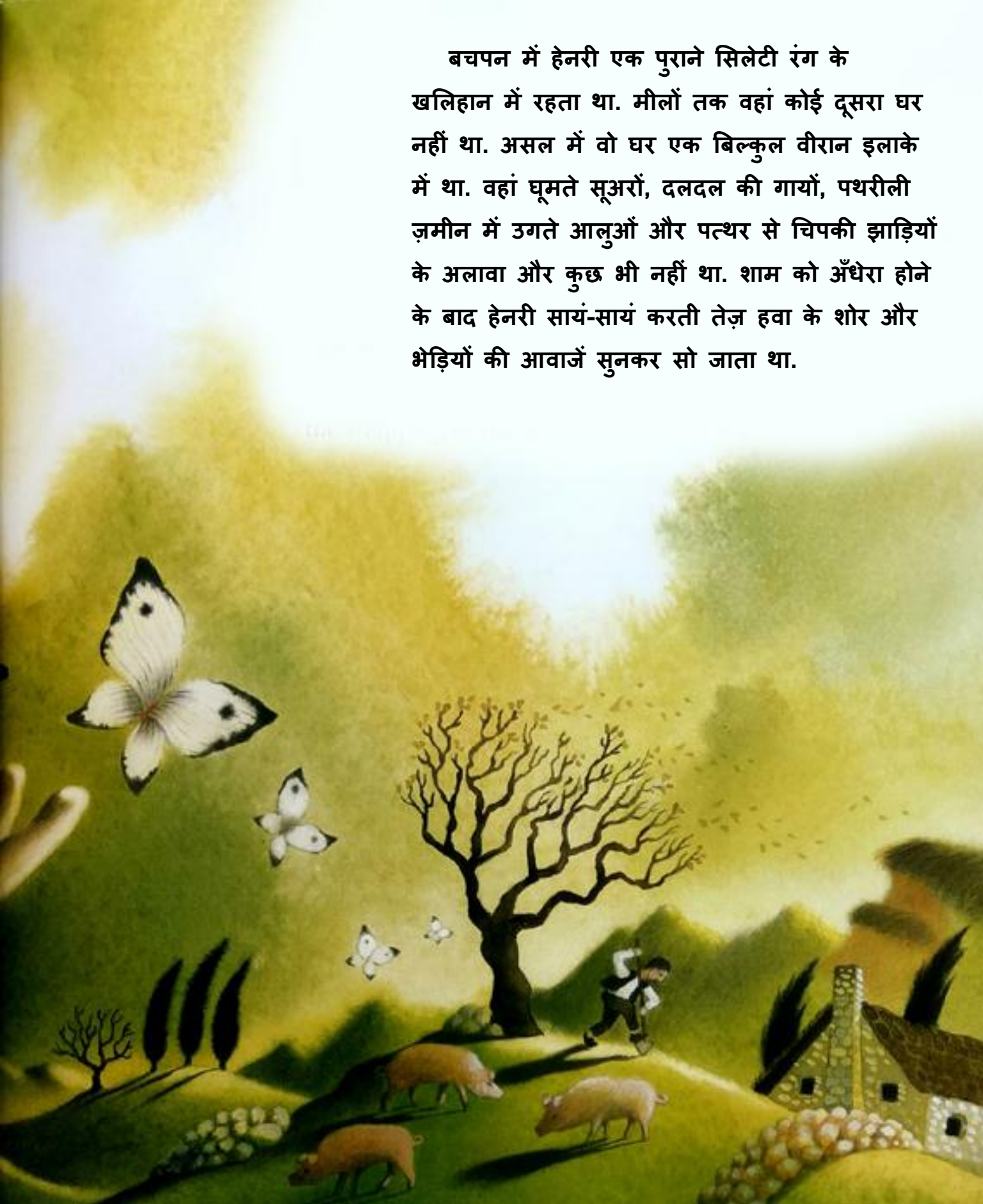


उसका नाम था ज्यां हेनरी फेबर.

प्रतिभा हासिल करने के लिए लोग अलग-अलग रास्ते अपनाते हैं.

मिस्टर फेबर ने लगभग सौ साल पहले पहाड़ी के इस ओर अपना काम शुरू किया था.

बचपन में हेनरी एक पुराने सिलेटी रंग के खलिहान में रहता था. मीलों तक वहां कोई दूसरा घर नहीं था. असल में वो घर एक बिल्कुल वीरान इलाके में था. वहां घूमते सूअरों, दलदल की गायों, पथरीली ज़मीन में उगते आलुओं और पत्थर से चिपकी झाड़ियों के अलावा और कुछ भी नहीं था. शाम को अँधेरा होने के बाद हेनरी सायं-सायं करती तेज़ हवा के शोर और भेड़ियों की आवाजें सुनकर सो जाता था.



पर जहाँ दूसरों के लिए वो पत्थरों, दलदलों, गाय के गोबर और बारिश से भरी एक कठिन और उदास ज़िन्दगी होती, वहां हेनरी के लिए वो ज़िन्दगी छोटे-छोटे अचरजों से भरी थी.

जब हेनरी हरी पत्ती के ऊपर एक नीले आसमानी रंग का कीड़े को बैठे देखता तो उसके लिए वो एक बड़े अचरज का पल होता.



वहां कुकुरमुत्ते, मुर्गी के अंडे जैसे थे
– एकदम गोल और सफ़ेद, तकिए जैसे मुलायम.



हेनरी वहां पत्थरों में तराशे भेड़ के सींग खोजता था.

इधर-उधर हीरे जैसे पत्थर और सोने जैसी धूल बिखरी थी – वे सब पत्थरों के कोटरों में छिपे थे.



बहुत बाद में ही हेनरी उन सब चीज़ों के सही नाम जान पाया. वो उन नामों का मन्त्रों जैसे जाप करता था : होप्लिया बीटल, अमैनिटा मशरूम, ऐम्मोनाईट फॉसिल, स्फटिक और अबरक की पपड़ियाँ.

अभी के लिए वो नमूने उसके लिए बिना नाम के चमत्कार थे.

जब हेनरी सात साल का हुआ तो उसका परिवार वहां से शहर में जाकर बस गया. वहां उसने स्कूल जाना शुरू किया. वहां भी उसे रोजाना कोई-न-कोई अचरज मिलता था. जब पिता ने उसे बत्तखों की देखभाल करने के लिए तालाब पर भेजा तो हेनरी पानी से पूरी तरह भीगा हुआ घर लौटा. उसकी जेबें तालाब में मिले खजानों से लदी थीं.

क्लास में जब बाकी बच्चे लैटिन लिखते तब हेनरी ततैया के डंकों और पौधों की फलियों से खेलता. उसकी डेस्क के हर कोने में इस तरह के अजूबे छिपे पड़े थे.

अक्सर वो इन चीज़ों को खुद तक ही सीमित रखता था. शायद किसी और को वो सब समझ में आता भी नहीं. उसके टीचर पूछते – फूलों की चीरफाड़ करके तुम्हें क्या मिलेगा, जब ग्रीक और गणित के प्रश्न तुम्हारे सामने मुंह बाए खड़े हैं?”







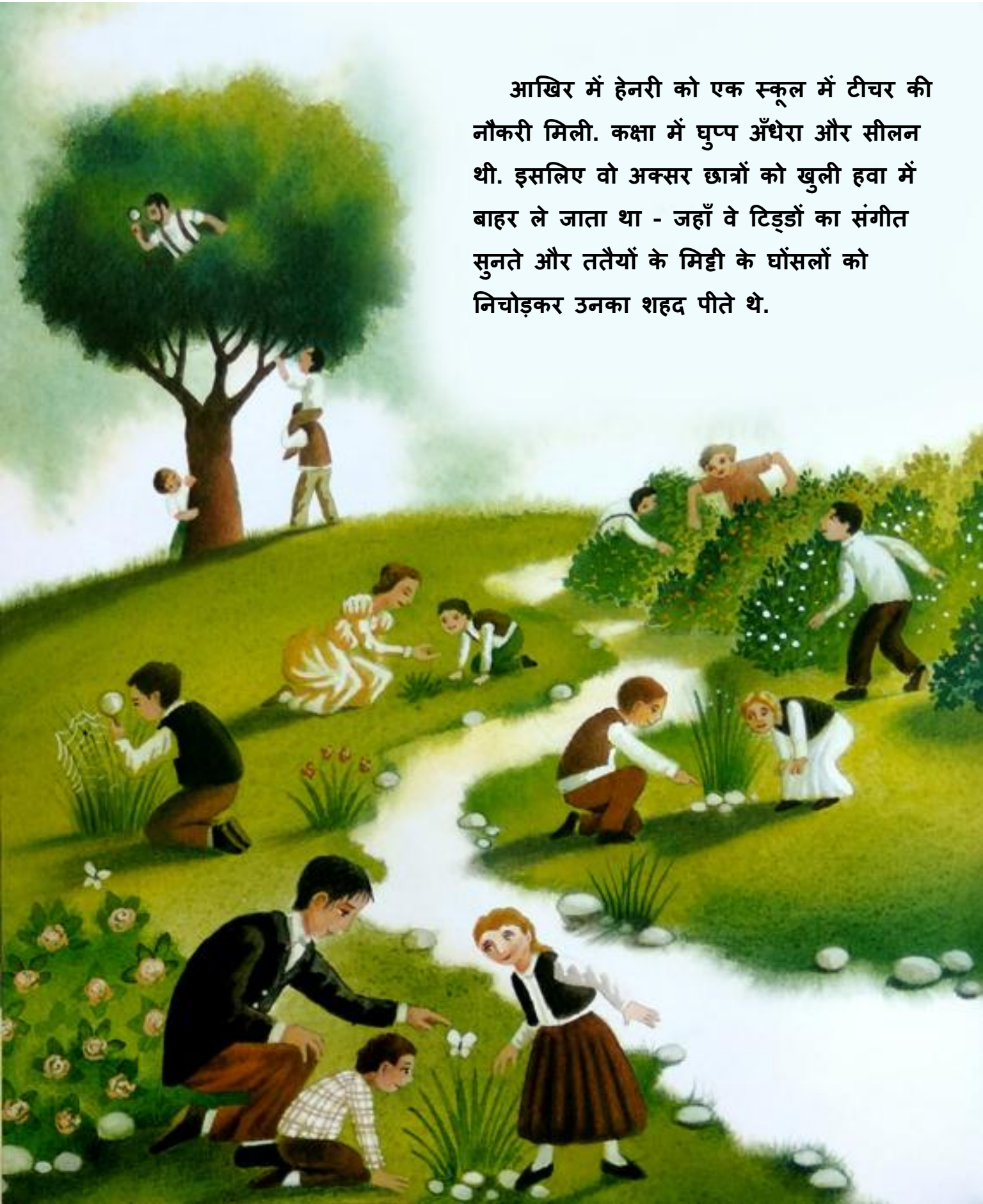
हेनरी के पिता बेहतर नौकरी की तलाश में अपने परिवार के साथ अलग-अलग शहरों में भटके. पर उन्हें कहीं भी अच्छी नौकरी नहीं मिली.

जब हेनरी सोलह साल का हुआ तो उसने खुद काम ढूँढने की सोची. उसने रेलवे में गैंगमैन का काम किया, बाज़ार में नींबू बेंचे. कई दिनों तक वो सड़क के किनारे लगे बगीचों से अंगूर खाकर जिंदा रहा.

हेनरी जहाँ भी देखता, छोटे-छोटे अचरज उसे अपनी ओर खींचते. बंजर ज़मीन पर खरपत का हर टुकड़ा कीड़ों-मकौड़ों से भरा होता – चमकती बीटल्स, भयानक ततैयों, संगीतज्ञ झींगुरों आदि से.







आखिर में हेनरी को एक स्कूल में टीचर की नौकरी मिली. कक्षा में घुप्प अँधेरा और सीलन थी. इसलिए वो अक्सर छात्रों को खुली हवा में बाहर ले जाता था - जहाँ वे टिड्डों का संगीत सुनते और ततैयों के मिट्टी के घोंसलों को निचोड़कर उनका शहद पीते थे.



एक बात जल्द ही हेनरी को समझ में आई. टीचर बनने के बाद उसे अपने प्रिय कीड़ों-मकौड़ों के अध्ययन करने का बिल्कुल समय नहीं मिलता था. फिर कई साल कुछ ख़ास नहीं हुआ. उसके बाद उसकी ज़िन्दगी में एक ख़ुशी की लहर आई. उसे एक युवा टीचर - मेरी से प्रेम हो गया और उनकी शादी हुई. उनके पहले दो बच्चे चल बसे. उससे हेनरी बहुत दुखी हुआ. गम से बचने के लिए वो फिर से कीड़ों-मकौड़ों का अध्ययन करने लगा.



इस बीच उसने लगातार अपनी पढ़ाई ज़ारी रखी और अंत में उसने उच्चतम डिग्री हासिल की. सर्दियों की एक शाम को हेनरी ने एक लेख पढ़ा, जिससे कीड़ों-मकौड़ों के प्रति उसका जूनून दुबारा जागृत हुआ.

यह लेख एक ततैया (वास्प) के बारे में था जो अपने से दुगने आकार की बीटल का शिकार करती थी. ततैया अपने घोंसले में अंडों के साथ-साथ एक बीटल भी छोड़ जाती थी. क्यों? वो बीटल उसके आने वाले बच्चों का आहार बनती थी.

देखने में बीटल मृत लगती थी, पर ततैया के घोंसले में वो बीटल हमेशा ताज़ी रहती थी. क्यों? क्या ततैया ने मृत्यु के बाद भी, जीवन संरक्षण का कोई राज खोज निकाला था?

इससे पहले हेनरी ने कीड़ों-मकौड़ों के बारे में कई किताबें पढ़ी थीं. पर उनमें से ज्यादातर पुस्तकें बेहद उबाऊ थीं. पर अब उसकी कीटों में रूचि दुबारा जगी थी. वो अब कीड़ों-मकौड़ों के जीवन की कहानियां – उनकी ज़िन्दगी के रहस्यों को अपने लेखन से उजागर करना चाहता था.



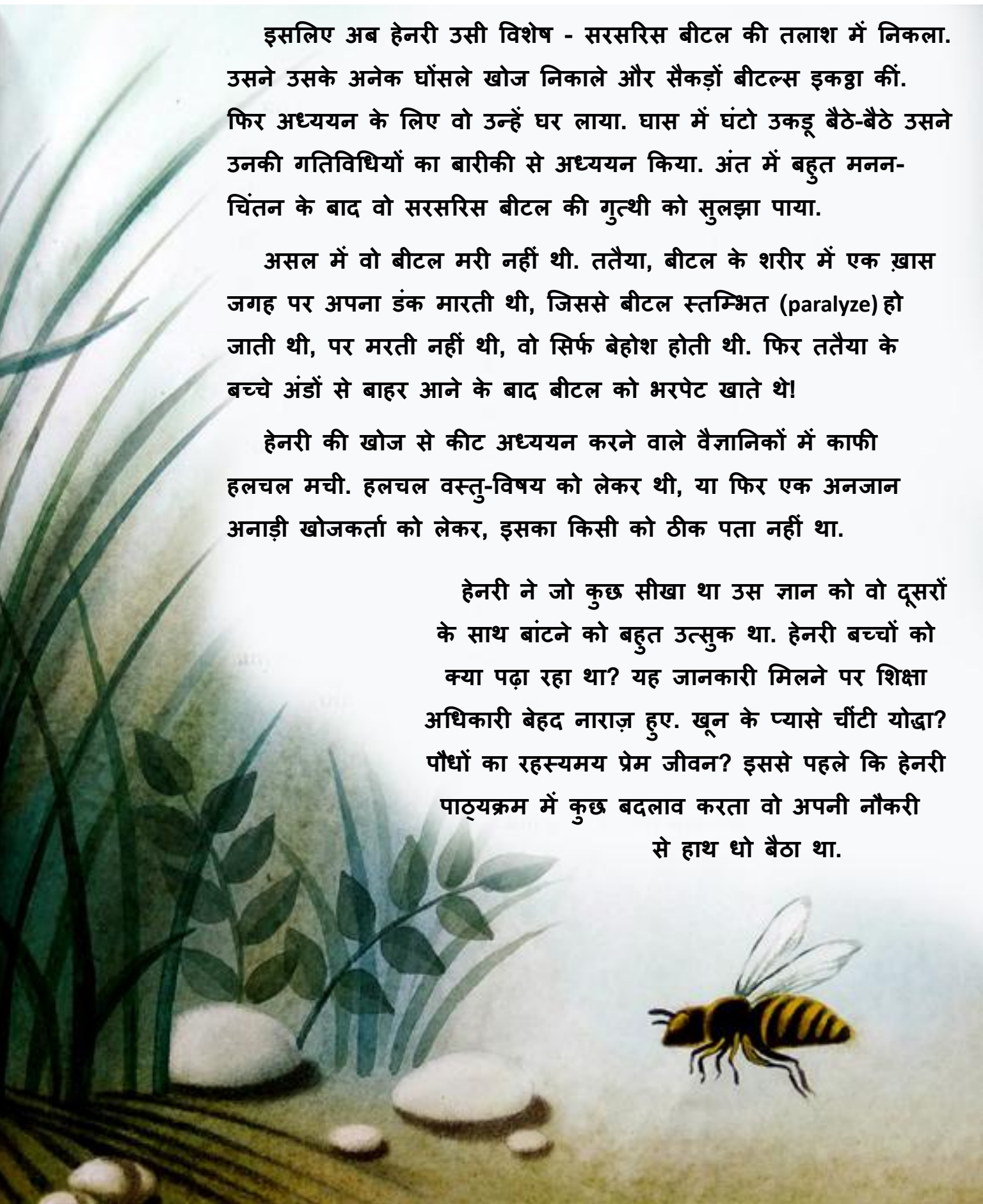


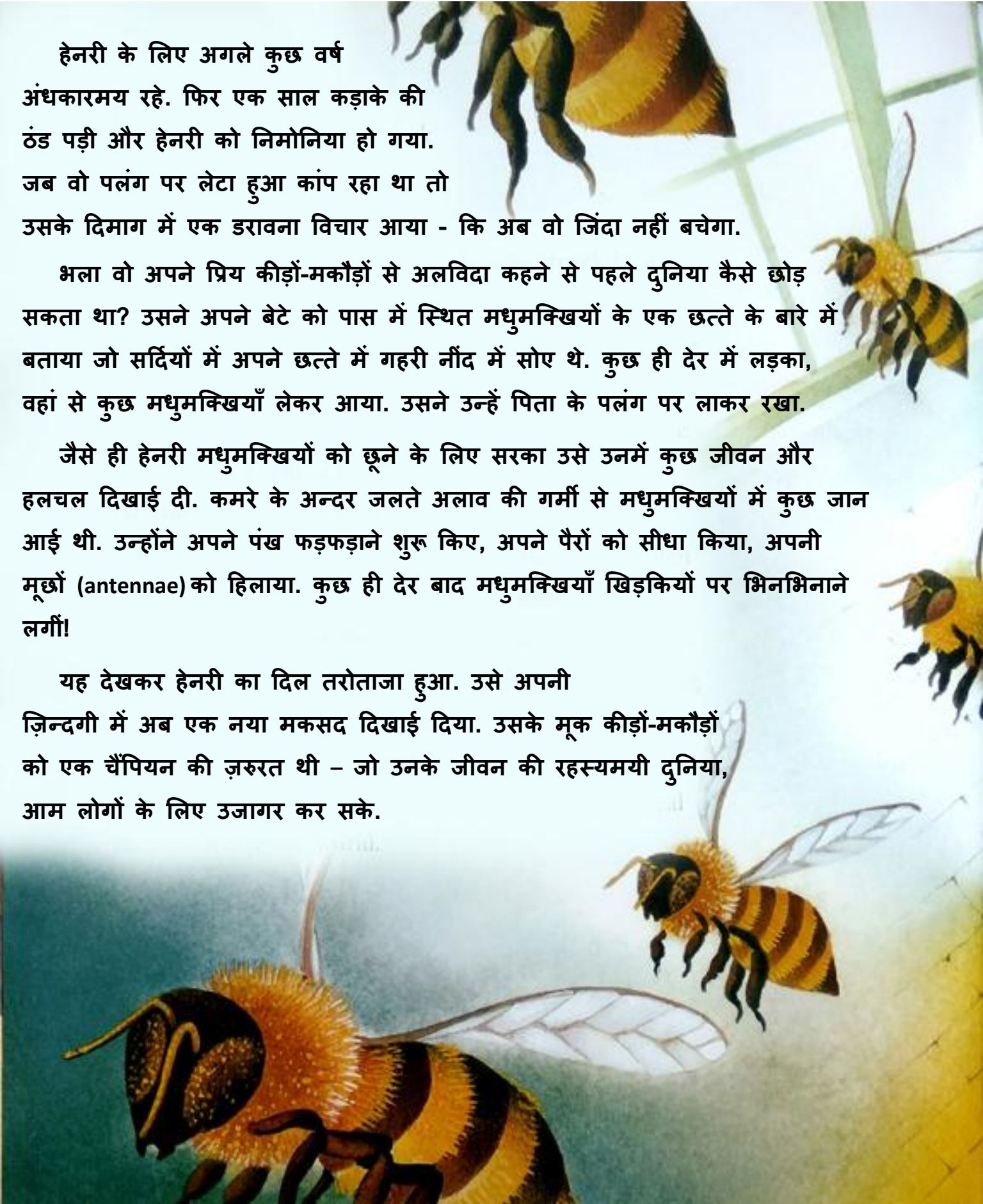
इसलिए अब हेनरी उसी विशेष - सरसरिस बीटल की तलाश में निकला. उसने उसके अनेक घोंसले खोज निकाले और सैकड़ों बीटल्स इकट्ठा कीं. फिर अध्ययन के लिए वो उन्हें घर लाया. घास में घंटो उकड़ू बैठे-बैठे उसने उनकी गतिविधियों का बारीकी से अध्ययन किया. अंत में बहुत मनन-चिंतन के बाद वो सरसरिस बीटल की गुत्थी को सुलझा पाया.

असल में वो बीटल मरी नहीं थी. ततैया, बीटल के शरीर में एक ख़ास जगह पर अपना डंक मारती थी, जिससे बीटल स्तम्भित (paralyze) हो जाती थी, पर मरती नहीं थी, वो सिर्फ बेहोश होती थी. फिर ततैया के बच्चे अंडों से बाहर आने के बाद बीटल को भरपेट खाते थे!

हेनरी की खोज से कीट अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों में काफी हलचल मची. हलचल वस्तु-विषय को लेकर थी, या फिर एक अनजान अनाड़ी खोजकर्ता को लेकर, इसका किसी को ठीक पता नहीं था.

हेनरी ने जो कुछ सीखा था उस ज्ञान को वो दूसरों के साथ बांटने को बहुत उत्सुक था. हेनरी बच्चों को क्या पढ़ा रहा था? यह जानकारी मिलने पर शिक्षा अधिकारी बेहद नाराज़ हुए. खून के प्यासे चींटी योद्धा? पौधों का रहस्यमय प्रेम जीवन? इससे पहले कि हेनरी पाठ्यक्रम में कुछ बदलाव करता वो अपनी नौकरी से हाथ धो बैठा था.





हेनरी के लिए अगले कुछ वर्ष अंधकारमय रहे. फिर एक साल कड़ाके की ठंड पड़ी और हेनरी को निमोनिया हो गया. जब वो पलंग पर लेटा हुआ कांप रहा था तो उसके दिमाग में एक डरावना विचार आया - कि अब वो जिंदा नहीं बचेगा.

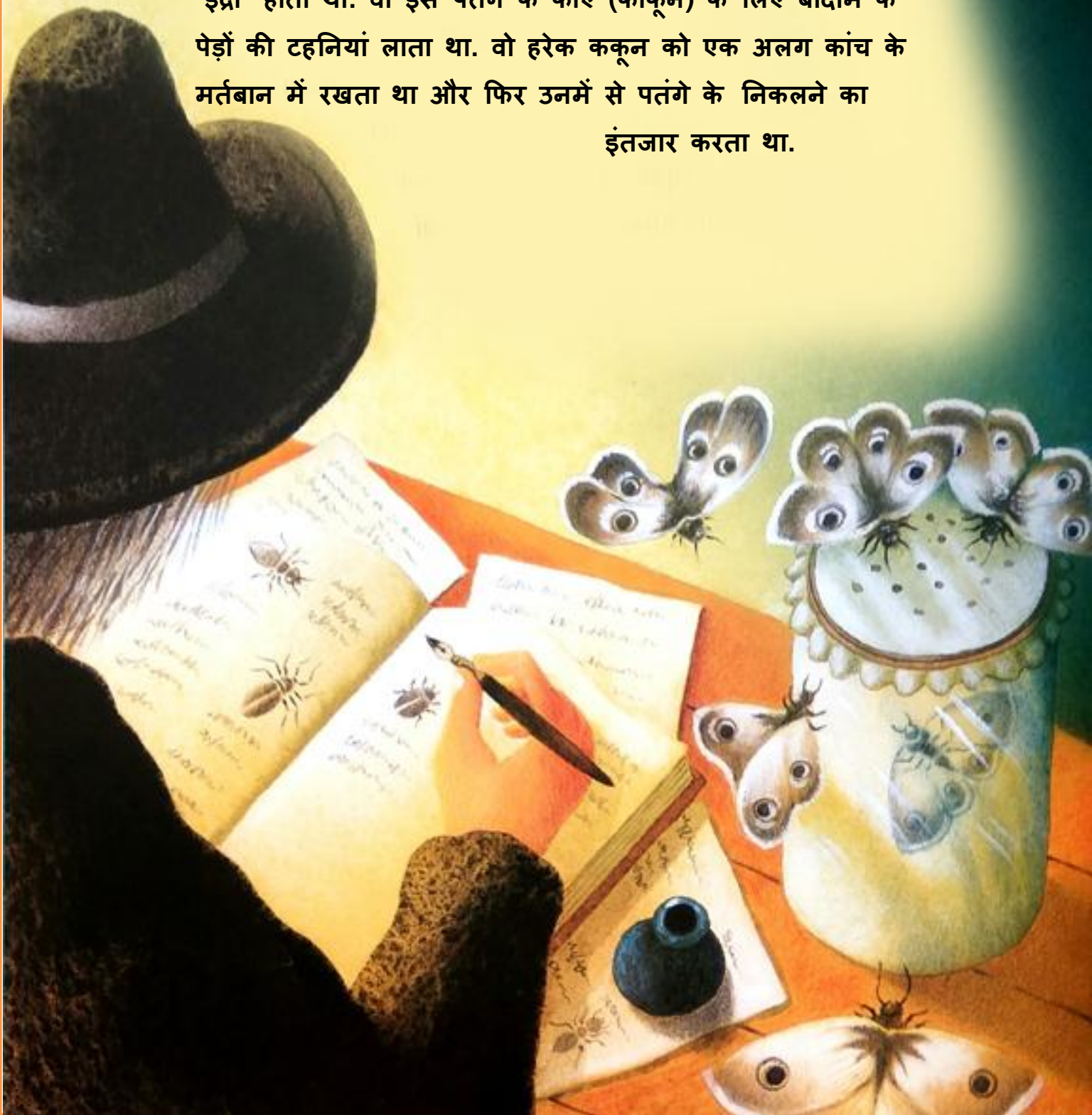
भला वो अपने प्रिय कीड़ों-मकौड़ों से अलविदा कहने से पहले दुनिया कैसे छोड़ सकता था? उसने अपने बेटे को पास में स्थित मधुमक्खियों के एक छत्ते के बारे में बताया जो सर्दियों में अपने छत्ते में गहरी नींद में सोए थे. कुछ ही देर में लड़का, वहां से कुछ मधुमक्खियाँ लेकर आया. उसने उन्हें पिता के पलंग पर लाकर रखा.

जैसे ही हेनरी मधुमक्खियों को छूने के लिए सरका उसे उनमें कुछ जीवन और हलचल दिखाई दी. कमरे के अन्दर जलते अलाव की गर्मी से मधुमक्खियों में कुछ जान आई थी. उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाने शुरू किए, अपने पैरों को सीधा किया, अपनी मूछों (antennae) को हिलाया. कुछ ही देर बाद मधुमक्खियाँ खिड़कियों पर भिनभिनाने लगीं!

यह देखकर हेनरी का दिल तरोताजा हुआ. उसे अपनी ज़िन्दगी में अब एक नया मकसद दिखाई दिया. उसके मूक कीड़ों-मकौड़ों को एक चैंपियन की ज़रुरत थी – जो उनके जीवन की रहस्यमयी दुनिया, आम लोगों के लिए उजागर कर सके.



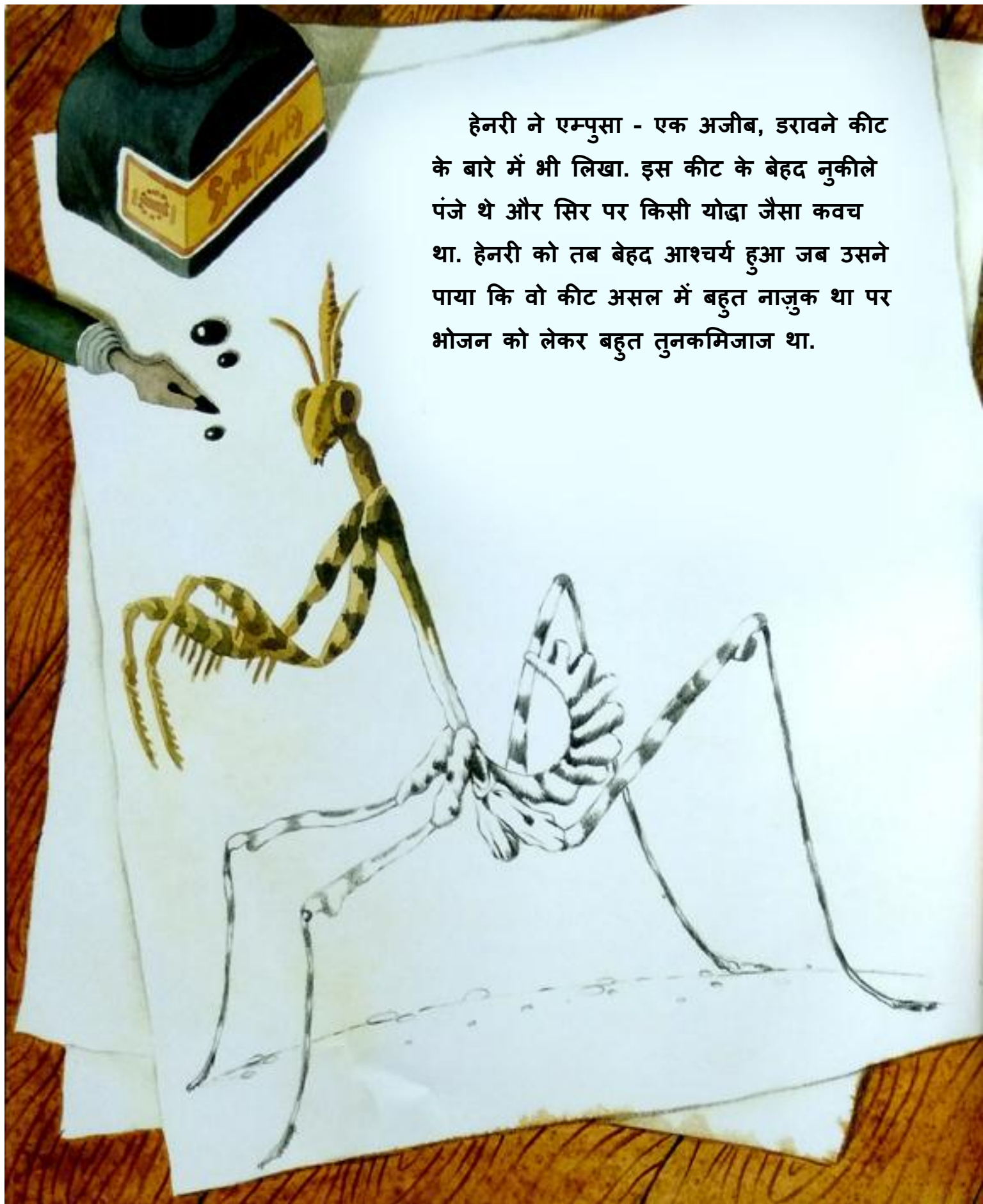
उसके बाद हफ़्तों और सालों तक हेनरी, कीड़ों-मकौड़ों के बारे में बिना रुके लिखता रहा. अक्सर शब्द उसके अंतःकरण से कविता जैसे फूटकर बाहर निकलते थे. उसने चमगादड़ जैसे पंख वाले ग्रेट पीकॉक पतंगे (moth) के बारे में लिखा. इस पतंगे की एक छठवीं "इंद्री" होती थी. वो इस पतंगे के कोए (कोकून) के लिए बादाम के पेड़ों की टहनियां लाता था. वो हरेक ककून को एक अलग कांच के मर्तबान में रखता था और फिर उनमें से पतंगे के निकलने का इंतजार करता था.



अगर पतिंगा मादा होती तो फिर एक गज़ब की बात होती. रात को मादा की गंध का सुराग पाकर मीलों दूर से नर-पतंगे उस कांच के मर्तबान में बंद मादा की ओर खिंचे चले आते.

उसने उन घुमक्कड़ इल्लियों (Processionary Caterpillars) के बारे में भी लिखा जो एक बड़े कारवां में, सीधी लाइन में, दिन-रात यात्रा करती थीं. हेनरी ने उन कैटरपिलर्स को फूलों के एक गमले की ऊपरी गोल किनार पर रखा. उसने अंतिम कैटरपिलर की पूँछ, सबसे सामने वाले के सिर से चिपकाई. फिर क्या हुआ? उसके बाद कैटरपिलर्स का यह कारवां कई दिनों तक गमले की गोल-गोल परिक्रमा लगाता रहा!





हेनरी ने एम्पुसा - एक अजीब, डरावने कीट के बारे में भी लिखा. इस कीट के बेहद नुकीले पंजे थे और सिर पर किसी योद्धा जैसा कवच था. हेनरी को तब बेहद आश्चर्य हुआ जब उसने पाया कि वो कीट असल में बहुत नाज़ुक था पर भोजन को लेकर बहुत तुनकमिजाज था.



हेनरी ने सिसीफस – गुबरैले (डंग बीटल) के बारे में भी लिखा. गुबरैले दंपत्ति की जोड़ी बिल्कुल आदर्श होती है. हेनरी, गुबरैले की जोड़ियों को अपने घोंसले तक गोबर की गेंद को लुढ़काते हुए देखता था. गोबर की गेंद उनके बच्चों के लिए अच्छा भोजन थी. लुढ़काने का यह काम गुबरैला जोड़ी घंटों करते थे – मादा गेंद को आगे खींचती थी और नर उसे पीछे से धक्का देता था.

हेनरी ने दर्जनों अन्य कीटों के बारे में भी लिखा. हरेक कीड़े की कथा बेहद रोचक और अनूठी थी. फिर जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे इस मशहूर सन्यासी लेखक की ख्याति भी फैलती गई.

अंत में हेनरी पर्याप्त धन इकट्ठा कर पाया. उसके बाद ही वो अपने एक पुराने सपने को पूरा कर पाया. उसे एक छोटे से गाँव में एक गुलाबी रंग का घर दिखा, जो ऊंची दीवारों और सघन पेड़ों के पीछे छिपा था. वहाँ पर हेनरी ने धीरे-धीरे करके कीड़ों-मकौड़ों के लिए एक स्वर्ग स्थापित किया.

जैसे-जैसे हेनरी काम करता, मौसम बदलता रहता : पर हर मौसम अपने साथ नए-नए अजूबे लाता. पर क्या अन्य लोग भी उन चीज़ों को उसकी तरह ही देखते थे?

हेनरी जब नब्बे साल का हुआ तो उसने खुद से यह सवाल पूछा. जब उसने पीछे मुड़कर अपनी कठिन ज़िन्दगी पर नज़र डाली तो वो उसे एक पथरीली ज़मीन में खिले छोटे से सुन्दर फूल जैसी लगी. अगर उसकी किताबें किसी एक पाठक के दिल में छोटी सी भी चिंगारी जलाएं तो फिर उसकी ज़िन्दगी सफल होगी.





एक दिन फ्रांस के सभी अखबारों में यह प्रमुख खबर छपी. फ्रांस के सबसे महान वैज्ञानिक अपने ही देश के एक विलक्षण वैज्ञानिक को सम्मानित करने के लिए इकट्ठे हुए. सारे वैज्ञानिकों का एक मत था कि ज्यां हेनरी फेबर - कीड़ों-मकौड़ों के कवि को, नोबल पुरुस्कार के लिए नामांकित किया जाए. फिर उस कमेटी ने पूछा – वो इंसान आखिर है कहाँ? कहाँ है वो छिपा-रुस्तम?

उसके बाद सेरिगनन के किसान अपनी ज़िन्दगी में पहली बार खेतों को छोड़कर मोटर कारों का कारवां देखने को दौड़े.



उस दिन फ्रांस के राष्ट्रपति की मोटर कारों का झुंड, उस गाँव की धूल भरी सड़कों पर दौड़ा.

एक-के-बाद-एक करके गाँववाले जो भी काम कर रहे थे वो उसे छोड़कर गुलाबी मकान की तरफ दौड़े....



.....वो बिल्कुल सही समय पर वहां पहुंचे. उन्होंने उस पागल आदमी, उस जादूगर को, अपने मेहमान की अगुवाई किसी राजा जैसे करते हुए देखा.





हम सब में – चाहें हम इंसान हों या जानवर, कोई विशेष गुण होता है.

किसी बच्चे की संगीत में रुची होती है....कोई गणित में तेज़ होता है.

कीड़ों के साथ भी वही बात सच है.

कोई मधुमक्खी पत्तियां काटने में दक्ष होती है, कोई बेहतरीन मिट्टी के घर बनाती है...

इंसानों में विशेष गुण को हम प्रतिभा (जीनियस) कहते हैं.

कीड़ों में हम उसे स्वाभाविक (इंस्टिंक्ट) कहते हैं.

इंस्टिंक्ट कीड़ों की प्रतिभा होती है.

- ज्यां हेनरी फेबर

ऐतिहासिक नोट्स:

1800 के शुरू के सालों में जब ज्यां हेनरी कासिमिर फेबर बड़ा हो रहा था तब वैज्ञानिक अक्सर पौधों और जीवों का अध्ययन प्रयोगशाला में या फिर किसी दूर-दराज़ के इलाके में जाकर करते थे. एंटोमोलोजी – यानि कीड़ो-मकौड़ों का अध्ययन, सिर्फ गिने-चुने विशेषज्ञ ही करते थे. आम लोग घरेलू कीड़ो-मकौड़ों – जैसे मधुमक्खी, झींगुर और तितलियों से ज़रूर परिचित थे. पर एंटोमोलोजी पर लिखी अधिकतर पुस्तकों में इन कीटों के बारे में बहुत कम ही जानकारी होती थी. उन पुस्तकों में कीड़ों का माप और वर्णन बड़ी उबाऊ भाषा – अक्सर ग्रीक अथवा लैटिन में लिखा होता था. कभी-कभी कुछ कीड़े-मकौड़ों की सुन्दर पेंटिंग्स भी होती थीं, पर कतारों में सजे वे मृत नमूने अक्सर किसी दूर देश के ही होते थे.



फेबर का काम इससे बिल्कुल अलग था. वो अपने आसपास के – बगीचे, सड़क, या फ्रांस के गाँव में मिलने वाले कीड़े-मकौड़ों का अध्ययन करता था. दूसरी बात - वो मृत कीड़ों का नहीं बल्कि जीवित कीड़ों के व्यवहार का अध्ययन करता था.

प्राकृतिक परिवेश में अध्ययन करके फेबर ने कीड़ों के बारे में अदभुत खोजें कीं. वो पहला व्यक्ति था जिसने सिद्ध किया कि कीड़े एक-दूसरे के साथ संवाद के लिए फेरोमोन रासायन (केमिकल) का उपयोग करते थे. फेबर ने पहली बार "हाइपर-मेटामोर्फोसिस" की अवधारणा को सामने रखा. इसके तहत कुछ कीड़े जैसे – "बी-फ्लाई" और "ब्लिस्टर बीटल्स" अपने विकास के समय – यानि बड़े होने के दौरान, दो बिल्कुल अलग-अलग अवस्थाओं से गुज़रते थे.

वो पहला व्यक्ति थे जिन्होंने जानवरों विशेषकर कीटों के "हार्ड-वायर्ड" व्यवहार का ज़िक्र किया. कीड़ों में "हार्ड वायरिंग" से हम उनके कई गुणों और विशेषताओं को समझ पाते हैं. जैसे – ततैया द्वारा बीटल को डंक मारकर बेहोश करना और दीमकों द्वारा ज़मीन पर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाना.

बाद में फेबर की सभी खोजें सही सिद्ध नहीं हुईं. पर जो लोग फेबर के क़दमों पर आगे बढ़े उन्होंने फेबर को बारीकी से अध्ययन करने वाला एक आदर्श वैज्ञानिक माना. प्रसिद्ध जीवशास्त्री चार्ल्स डार्विन, फेबर के प्रशंसक थे. वो उन्हें एक "असाधारण प्रेक्षक (आब्जर्वर)" मानते थे.

एक वैज्ञानिक की हैसियत से फेबर ने कई महत्वपूर्ण बातें हासिल कीं. पर जो बात उन्हें अन्य वैज्ञानिकों से अलग कोटि में रखती थी वो थी दूसरों में अपने ज्ञान को बांटने की उनकी ललक – न केवल अन्य वैज्ञानिकों के साथ पर पूरी दुनिया के आम लोगों के साथ. क्योंकि फेबर ने पौधों और कीटों के जीवन के हर पक्ष पर लिखा और क्योंकि उनकी कुछ खोजें लोगों को चौकाने वाली लगीं इसलिए वैज्ञानिकों ने उन्हें औरतों और बच्चों तक पहुँचने से रोका. पर फेबर का मानना था कि हर इंसान को प्रकृति की जटिलताओं को उनकी समग्रता में देखना चाहिए. इसमें फेबर का खुद का परिवार भी शामिल था. परिवार ने फेबर को कठिनाइयों और आशंकाओं के दौर में पूरा सहारा दिया. परिवार ने फेबर को कीड़े-मकौड़ों इकट्ठे करने में, बगीचे की सफाई और फेबर द्वारा घर लाए कीटों को भोजन खिलाने में भी मदद की.

फेबर ने दो सौ से ज्यादा पेपर्स लिखे – जिनमें तकनीकी रिपोर्ट्स और कवितायें भी शामिल थीं. अपने जीवन के अंत में वो उस मुकाम पर पहुंचे जिसका बाकी वैज्ञानिक सिर्फ सपना ही देख सकते हैं. शायद वो पहले वैज्ञानिक थे जिन्हें साहित्य के नोबल पुरुस्कार के लिए नामांकित किया गया. बहुत से पाठक फेबर की "एंटोमोलोजिकल मेमोरीज" (कीड़ों की यादों) को क्लासिक मानते हैं. यह लेख 10 खण्डों में हैं – इनमें कीड़ो-मकौड़ों और प्रकृति पर निबंध हैं जो बेहद सुन्दर और आसान भाषा में लिखे गये हैं. फेबर के यह खंड और अन्य पुस्तकें इस बात की अपील करती हैं कि हमें अपने आसपास की दुनिया को नए नज़रिए, धैर्य और प्रेम से देखें – तभी हम छोटे-छोटे कीटों की रहस्यमय और अचरज से भरी जिंदगी को उजागर कर पाएंगे.

आज भी अधिकांश लोग फेबर के बारे में बहुत कम ही जानते हैं. फेबर सबसे अधिक लोकप्रिय अपने देश फ्रांस में ही हैं, जहाँ उसके बचपन का घर अब एक म्यूजियम बन गया है. उसके साथ में एक कीड़ो-मकौड़ों का पार्क और शिक्षा-केंद्र भी है जिसका नाम "मिक्रोपोलिस" है. फेबर का गुलाबी रंग का मकान भी अब एक म्यूजियम में तब्दील हो चुका है और सेरिगनन के बगीचों में अब आम लोग सैर कर सकते हैं. फेबर के 200 साल के बाद अब दुनिया बहुत अधिक तेज़ी से बदल रही है. फेबर के अनेक प्रिय कीटों, जानवरों और पौधों पर अब लुप्त होने का संकट मंडरा रहा है. इसलिए इस समय फेबर का सन्देश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है.





समय रेखा

1823	ज्यां हेनरी कासिमिर फेबर का सेंट-लेओंस, फ्रांस में जन्म
1826	फेबर को गाँव मलावल में अपने नाना-नानी के साथ रहने भेजा गया
1828	फ्रांस में पहली राष्ट्रीय रेल का निर्माण
1830	सेंट-लेओंस में वापिस. फेबर ने स्कूल शुरू किया
1832	फेबर का परिवार रोडेज़ – बड़े शहर में शिफ्ट हुआ. वहां पिता ने कैफ़े खोला
1838	सामुएल मोर्स ने टेलीग्राफ मशीन का सार्वजानिक डेमो दिया
1839	फेबर ने स्कूल छोड़ दिया और काम-धंधे पर लगा
1842	फेबर ने टीचर बनने की पढ़ाई ख़त्म की और कारपेनत्रास में पहली नौकरी की
1844	फेबर ने साथी टीचर मेरी सेसरीन विल्लर्ड से शादी की
1848	फ्रांस में क्रांति के बाद लुइस नेपोलियन (तृतीय) सत्ता में आया
1849	फेबर को कोर्सिका द्वीप में फिजिक्स टीचर की नौकरी मिली
1853	फेबर ने कोर्सिका से वापिस आकर अविग्नॉन के हाई स्कूल में पढ़ाया
1855	सरसरिस बीटल और उसके शिकार पर पहला वैज्ञानिक निबंध प्रकाशित
1859	चार्ल्स डार्विन की पुस्तक *ओन द ओरिजिन ऑफ़ स्पीशीज* का प्रकाशन
1865	अमरीकी गृह युद्ध की समाप्ति
1866	अविग्नॉन नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम में काम. शाम को लोगों को पढ़ाने का काम
1870	फेबर की लोकप्रियता पर संदेह. फेबर इस्तीफ़ा देकर ऑरेंज सिटी में जा बसे
1876	एलेग्जेंडर ग्रैहम बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया
1877	फेबर के प्रिय बेटे जूल्स का 16 वर्ष की आयु में देहांत
1878	फेबर को निमोनिया हो गया और वो मरते-मरते बचे
1879	फेबर सेरिगनन गाँव में शिफ्ट हए. वहां उसने “हरमास” नाम का घर खरीदा वहां उसने अपना महान लेखन शुरू किया
1889	पेरिस में आईफिल टावर्स का निर्माण
1903	राईट बंधुओं ने दुनिया का पहला हवाई जहाज़ उड़ाया
1912	फेबर का नाम साहित्य के नोबल पुरुस्कार के लिए नामांकित
1913	फ्रांस के राष्ट्रपति – रेमंड पोइनसेर फेबर से मिलने उसके घर हरमास आए
1914	पहले महायुद्ध की शुरुआत
1915	92 वर्ष की आयु में फेबर का देहांत

लेखक के नोट्स

यह किताब लिखने से पहले मैं पूरी ज़िन्दगी एक शौकिया प्राकृतिक वैज्ञानिक रहा था और मेरी कीड़ो-मकौड़ों में विशेष रूचि थी. मैंने स्कूल में जीव-शास्त्र पढ़ा था और उसके बाद मैंने सालों तक पर्यावरण विज्ञान का अध्ययन किया था. उसके बावजूद मुझे ज्यां हेनरी फेबर के बारे में कुछ भी नहीं पता था. शायद मैं फेबर के बारे में जानने की कभी कुछ कोशिश भी नहीं करता पर एक दिन मुझे अपने बगीचे में एक अजीब चीज़ दिखी – लाल और काले रंग की एक ततैया, एक बड़े कैटरपिलर (इल्ली) को फूलों की क्यारी में खींचकर ले जा रही थी. वो कहाँ जा रही थी? क्या वो कैटरपिलर मृत था? यह सब जानने को मैं बहुत इच्छुक हुआ. पर मैं बहुत व्यस्त भी था. इसलिए ततैया को मैंने उसके अपने हाल पर ही छोड़ दिया. फिर मैंने उस अजीबोगरीब घटना का कारण इन्टरनेट पर खोजा.

कुछ की घंटों में मैं तमाम गज़ब की बातें खोज पाया : इस इंसान फेबर ने इन्टरनेट से 150 साल पहले, इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजा था. उसके पास सिर्फ दो आँखें और कुछ बेहद साधारण से औज़ार थे. उन्हें कोई भी अपने हाथों से खुद बना सकता था. इससे मैं प्रेरित भी हुआ और भ्रमित भी. एक गरीब खेत पर काम करने वाला लड़का, बिना पैसों, उपकरण और सिफारिश के भला कैसे दुनिया का एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक बना? मुझे इस महान वैज्ञानिक के बारे में पहले क्यों नहीं पता चला? अब मेरे दिमाग में तमाम सवाल कौंध रहे थे. उन सवालों के उत्तरों की खोज से ही यह पुस्तक जन्मी है. मुझे उम्मीद है कि मेरी यह छोटी सी किताब फेबर की विरासत को जिंदा रखने में मदद करेगी, और उससे फेबर दुनिया के हर इंसान तक पहुंचेंगे.





